We Promote N.H.M. Run By Govt. Of India
सी.एम.एस.ई.डी. ग्रामीण स्वास्थ्य शिक्षण संस्थान लखनऊ (उ.प्र.)
Affiliated by - BSS (National Health Agency of India) Code - UP/8134A
Established in 1952
By Planning Commission, Govt. of India, New Delhi
& Affiliated by I.R.M.C. Delhi (Code-IRMCCMS9941) Web. : www.irmc.in

UNIT - IV Chapter - 6

यौन संचारी रोग

Sexually Transmitted Diseases (STDs)

परिचय - यौन संचारित रोग ऐसे रोग है जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में Sexual Activities के द्वारा Transmit होते है एवं प्राथमिक तौर पर रोगी के मूत्र जनन तंत्र को प्रभावित करते है |

यौन संचारी रोग व उनके कारण

जीवाणुजनित यौन - संचारित रोग (Bacterial STD)

(1) गोनोरिया (Gonorrhea) - Neisseria gonorrhea
(2) ट्रेकोमेटिक (Trachomatis) - Chlamydia trachomatis
(3) सिफलिस (Syphilis) - Treponema pallidum
(4) वेनेरियम (Venereum) - Lymphogranuloma venereum
(5) केंक्राइड (Canchroid) - Haemophilus ducreyi
(6) गेन्यूलोमा (Granuloma) - Donovania granulomatis
(7) Non-Specific Vaginitis - Haemophilus vaginalis
(8) Mycoplasma संक्रमण - Mycoplasma hominis

वायरस जनित STD (Viral STD)

(1) एड्स - Human Immunodeficiency Virus
(2) हरपीज - Herpes Simplex Virus (HSV-2)
(3) कॉनडाइलोमा - Human Papilloma Virus (HPV) Pox Virus, Hepatitis B & C Virus

प्रोटोजोआ जनित STD (Protozoal STD)

(1) Vaginosis - Gardnerella Vaginalis
(2) Trichomonas Vaginitis - Trichomonas Vaginalis

कवक जनित STD (Fungal STD)

(1) Monoliasis - Candida albicans

बाह्य परजीवी जनित STD (Ectoparasitic STD)

(1) Scabies - Sarcoptes scabiei
(2) Pediculosis - Phthirus pubis (Crab Louse)

महिलाओं को प्रभावित करने वाले मुख्य यौन संचारी रोगों का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है-

(1) सिफलिस

(2) गोनोरिया

(3) जननांगीय मस्से

(4) एड्स

(1) सिफलिस (Syphilis)

परिभाषा- सिफलिस Treponema Pallidum नमक जीवाणु द्वारा कारित एक यौन संचारी रोग है जो कि दर्द रहित व्रण (Chancer), खुजली रहित चकत्तों (Rashes) एवं अंगो की क्षति द्वारा चरितार्थ होता है | यह संक्रमण यौन सम्बन्धों के अतिरिक्त, गर्भावस्था के दौरान माँ से गर्भस्थ शिशु को या जन्म के दौरान शिशु को संचारित हो सकता है |

सिफलिस के प्रकार (Types of Syphilis)

चिन्ह व लक्षणों के प्रकटन के आधार पर सिफलिस निम्न प्रकार का होता है -

- प्राथमिक सिफलिस (Primary Syphilis)
- द्वितीयक सिफलिस (Secondary Syphilis)
- सुप्त सिफलिस (Latent Syphilis)
- तृतीयक सिफलिस (Tertiary Syphilis)
- जन्मजात सिफलिस (Congenital or Neonatal Syphilis)

चिन्ह व लक्षण (Signs & Symptoms)

(1) Primary Syphilis

(I) प्रथम अवस्था- दर्द रहित व्रण (Painless Ulcer) जिन्हें Chancer कहते है |

(II) Chancer सख्त एवं गोल आकृति के होते है एवं संक्रमण के स्थान पर सामान्यतः एकल व्रण (Solitary Ulcer) के रूप में पाए जाते हैं |

(III) Chancer में संक्रामक जीवाणु रहते है, फलस्वरूप यह अवस्था बहुत संक्रामक होती है |

(2) Secondary Syphilis

(I) प्राथमिक अवस्था में उपचार न करने पर कुछ सप्ताह से कुछ माह में Secondary syphilis विकसित हो जाते है |

(II) यह अवस्था त्वचा पर खुजली रहित चकत्तों द्वारा पहचानी जाती है |

(III) ये Rashes शरीर के किसी भी हिस्से पर पाए जा सकते है, लकिन ये प्राय: हाथों की हथेलियों एवं पैरों के तलवों पर पाए जाते हैं |

(IV) इस अवस्था में शरीर के गरम व नम स्थलों (Armpit, Mouth or Groin) पर सलेटी या सफ़ेद उभरे हुए Patches प्रकट हो सकते है जिन्हें Condylomata कहते हैं |

(V) इन Rashes व Patches के अतिरिक्त यह अवस्था बुखार, वृद्धित लसिका गांठों, थकान, वजन में कमी, बाल झड़ने, सिरदर्द व मांसपेशियों में दर्द आदि लक्षणों द्वारा पहचानी जाती है |

(3) Latent Syphilis

इस stage में सिफलिस के प्राथमिक व द्वितीयक लक्षण विलुप्त हो जाते है एवं महिला सामान्यतः लक्षणविहीन रहती है| यह अवस्था कई वर्ष लम्बी हो सकती है|

(4) Tertiary Syphilis

Secondary Stage पर उपचार न करने पर Syphilis TertiaryStage में प्रवेश करती है | Secondary Syphilisके लगभग 15% अनउपचारित मरीजों में Teriary Stage प्रकट होती है जो कि प्राथमिक संक्रमण के 10-20 वर्षो के पश्चात विकसित हो सकती है| यह अवस्था एक या अधिक अंगो (eg. मस्तिष्क, आँखे, तंत्रिकाएं, ह्रदय रक्त वाहिकाएँ, यकृत, अस्थियाँ या जोड़) की क्षति द्वारा पहचानी जाती है| इस अवस्था में मरीज़ में Severe headache, Movement problem, Gradual loss of Sight, Dementia, Paralysis, Numbness आदि के लक्षण प्रकट हो सकते हैं |

(5) Congenital or Neonatal Syphilis

सिफलिस से पीड़ित माँ द्वारा इसका उपचार न लेने पर यह संक्रमण गर्भावस्था के दौरान या जन्म के दौरान शिशु को संचारित हो सकता है | परिणामस्वरुप सिफलिस सें पीड़ित महिलाओं के 40% शिशुओं की गर्भावस्था के दौरान या जन्म के तुरंत बाद मृत्यु हो जाती है | अगर ऐसे बच्चे Survive करते हैं तो उन्हें कई गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं (eg. दौरे, विकास मंदिता) का सामना करना पड़ता है |

निदान (Diagnosis)

- VDRL Test
- Rapid Plasminogen Reagent (RPR) Test
- Microhemagglutination Assay for T. pallidum (MHA-TP)
- Fluorescent Treponemal Antibody Absorbed Test (FTA-ABS)

जटिलताएँ (Complications)

- अंधता (Blindness)
- विभ्रम (Dementia)
- बहरापन (Deafness)
- आघात (Stroke)
- Aortic Aneurysm

उपचार (Treatment)

(I) मरीज़ व उनके यौन भागीदार का एंटीबायोटिक पेनिसिलिन द्वारा उपचार |

(II) पेनिसिलिन संवेदनशीलता की स्थिति में अन्य एंटीबायोटिक (eg. Doxycycline, Azithromycin, Ceftriaxone) द्वारा उपचार |

(III) उपचार पूर्ण होने तक यौन सम्बन्धों से परहेज |

(2) गोनोरिया (Gonorrhea)

परिभाषा - यह Neisseria gonorrhoeae नामक जीवाणु द्वारा कारित यह एक यौन संचारी रोग है जो कि महिला व पुरुष दोनों को प्रभावित करता है

चिन्ह व लक्षण (Sign & Symptoms)

गोनोरिया से संक्रमित अधिकांश महिलाओं में संक्रमण की शुरूआती अवस्था में कोई लक्षण प्रकट नहीं होते है | बाद में संक्रमित महिला में निम्न लक्षण प्रकट हो सकते है -

- बार- बार मूत्र विसर्जन
- मूत्र विसर्जन के दौरान जलन
- योनि में पीले रंग का श्राव
- जननांगो में लालिमा व सूजन
- योनि क्षेत्र में जलन / खुजली

समय- समय पर उपचार न होने पर श्रोणीय क्षेत्र के जननांगो (Cervix, Uterus, Fallopian tubes & Ovaries) संक्रमित होकर Pelvic Infammatory Dieases (PID) को जन्म देते हैं जो कि निम्न चिन्ह व लक्षणों द्वारा अभिव्यक्त होती है -

- बुखार
- पेट में दर्द
- संभोग के दौरान दर्द

उपचार (Treatment)

- एंटीबायोटिक्स (eg.- Penicillin, Ceftriaxone, Cefixime, Spectinomycin) आदि द्वारा उपचार |
- साथ में अन्य एंटीबायोटिक्स (eg.- Azithromycin, Doxycycline) द्वारा Chlamydia संक्रमण (जो कि Gonorrhea के साथ सामान्यतः पाया जाता है) का उपचार |

(3) जननांगीय मस्से (Genital Warts)

परिभाषा- यौनांग मस्से (Human Papilloma Virus (HPV) द्वारा कारित एक यौन संचारी रोग है जो कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं को अधिक प्रभावित करता है एवं यौनांगो पर Soft Growth द्वारा पहचाना जाता है |

चिन्ह व लक्षण (Sign & symptoms)

(I) बाह्य लक्षणों पर Soft Growth जिनका शीर्ष गोभी के फूल की तरह नज़र आता है एवं छूने पर कोमल या कुछ उबड़- खाबड़ महसूस होते हैं |

(II) ये Warts संख्या में एक या अनेक हो सकते हैं एवं त्वचा के रंग के या कुछ गहरे रंग के होते हैं| संक्रमित व्यक्ति के साथ मुख मैथुन करने पर ये Warts होंठों, मुँह, जीभ या गले में भी विकसित हो सकते हैं|

(III) Warts पर जलन या खुजली

(IV) Warts से Bleeding

(V) Vaginal discharge

जटिलतायें (Complications)

- Cervical Cancer
- Cervical Dysplasia
- Vulvar or Anal Cancer

उपचार (Treatment)

- Warts पर Topical Creams (eg.- Imiquimod, Podofyllin, Podofilox, Trichloracetic Acid)
- Topical Medicine से ठीक न होने पर शल्यक्रिया (eg.- Electrocautery, Cryosurgery Laser treatment, Excision) द्वारा Warts को हटाना |

एड्स (AIDS)

AIDS, HIV के संक्रमण के कारण होने वाला रोग है, जिसमे रोगी में HIV वायरस उपस्थित रहता है एवं साथ में रोगी को रोग- प्रतिरोधक क्षमता कम होने के कारण अन्य संक्रमण हो जाते हैं |

Immunodeficiency - जिसके कारण निम्नलिखित अवसरवादी संक्रमण हो जाते है -

- स्व प्रतिरक्षी विकार (Autoimmune Disorders)
- निमोनिया (Pneumonia)
- अर्थराइटिस (Arthritis)
- Hypergammaglobinemia

Autoimmunity - जिसके कारण स्वयं के शरीर के प्रति Antibodies का निर्माण हो जाता है एवं निम्न रोग हो जाते हैं -

- AIDS Dementia Complex
- HIV Encephalopathy
- Peripheral Neuropathies

Special points - HIV एक RNA Virus होता है, जिसमे रिवर्स Transcriptase एंजाइम उपस्थित होता है, जिसके कारण RNA Virus DNA में परिवर्तित हो जाता है |

Mode of Transmission -

- यौन संपर्क (Specially in Rectal Intercourse)
- संक्रमित रक्त के आधान पर (Infected Blood Transfusion)
- संक्रमित सुइयों के उपयोग (Use of Contaminated Needles) द्वारा
- प्लेसेन्टा के प्रसार (Placental Transmission)
- Delivery के समय शिशु को |
- स्तनपान द्वारा

Special Points -

- HIV संक्रमण के 6-8 सप्ताह बाद रोगी के शरीर में AIDS Virus के प्रति Antibodies का निर्माण हो जाता है |
- HIV शरीर में 8-10 वर्ष तक उदभवन काल (Incubation Period) में रह सकता है |

लक्षण (Clinical Manifestation) -

- लम्बे समय तक शरीर की लसिका गांठों में सूजन रहना (Persistant Generalized Adenopathy)
- वजन घटना (Weight loss)
- थकान (Fatigue)
- रात में पसीना आना (Night Sweating)
- बुखार (Fever)

HIV Encephalopathy के कारण उत्पन्न होने वाले लक्षण -

- चक्कर आना (Fainting)
- स्मृति ह्रास (Memory loss)
- ध्यान केन्द्रित न होना (Distraction)

अन्य अवसरवादी संक्रमण (Other Opportunistic Infections) जैसे -

- Otitis media
- T. B.
- Pneumonia from Pneumocystic Carnii
- कापोसी कैंसर (Kaposi's Sarcoma)

यौन संचारी रोगों से बचाव

Prevention of Sexually Transmitted Diseases

- PHC, CHC एवं Sub-centres पर STD रोगों के बारे में Health Eucation Provide करने
  वाले Banners लगाने चाहिए |
- STD Screening Programmes चलाये जाने चाहिए |
- लोगो को सिर्फ जीवनसाथी से यौन-संबंध स्थापित करने से लाभ बताए जाने चाहिए एवं ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए |
- लोगो को निरोध निशु:ल्क वितरित करना चाहिए |